

63

विष्णुसहस्रनाम

ॐ नमो भगवते
विष्णुसहस्रनाम
ॐ नमो भगवते
विष्णुसहस्रनाम
ॐ नमो भगवते
विष्णुसहस्रनाम

२२५५५५
२२५५५५
२२५५५५
२२५५५५
२२५५५५
२२५५५५
२२५५५५
२२५५५५

६३
२२५५५५

ॐ नमः ४ ये ते सत्क मायया । शिवज सत्त्वत्वादा ।
शिवज सत्त्व यान नमः स्कार परमेश्वर उयु दोगः
थिं ह्यध्वान सा पते सा स ज्ञेय नमः कि क थै अथ
द्वो स्या जया सत्ति दु स पा पे नमः कि न रु न सै सा
ज्ञ हा हा न स मु द् गर्भ स यो ने वा जे य उ या दौ

जर्म काय त रु नि तु य् द्या य म् न् म् नु नु य् थ
हा हा न सै मु ड पारं ग व ने सुं म फ् थ गु ति स
मु ड पारं ग वि आ हा दो वि आ क ह् म् श्री भ ग वाः
नू रु नं ज्ञान नं स पु र्ण ज्ञाना वु वि आ क ह् म् को न
स सत्ति दु गु या वि आ क ह् म् सो नि मु ति नु या वः
व

श्री साका मुनि धर्म ध्याया लक्षणा नमः
स्कार

विद्या कल ध्यायं लभ गवान् सव कर्म त्यादि ॥
धर्म ज्ञाने ते या गु धर्म या य धे क ग्व स स्य नं भ
तापि वृत्त स्यात् अज्ञान स कर्तुं देव ज्ञान व ध
य गु ई व गु न या आ न य गु वृत्त स सा न ज्ञा या
य फ ई व ध क आ ग द स्या वि द्या त ॥ कार्य न त्यादि ॥

॥ रु नं ग्व स ते न ज्ञान व त्तु न या र मा त वि वृत्त
रा पु र्व स स गु र्व गु या व र गु या यो गु गु व ई गु र्व
सि ई व ध क आ ग द स्या वि द्या त ॥ स म न त्यादि ॥
रु नं कि वि त् धाय वा य ल्क क वा व ल्क क नं ज्ञान
त्य था दान वि धि वि धा न सं गु क्त द य का द गु न

येनार्थाई वृथ्सुवातनु कोटि तो ता दान वि
याया फुन नार्थि वृध क आता दस्य विजात ॥ ऐवं
मया त्यादि ॥ रुनं ह गु कार य ह गु म म य ह गु वे
ने पर्म पुरि नार्थि स म ल नार्थि नं म गु रु गु या
वृथो ह सुभि तदे विजात उ ध्या या ल दान य

ति द या वृथो ह विजात न द या द स या स मि
प स उ जा न र य वृथो ह विजात न या म य गु या
वृथो ह अ न म स स या ल न मा फ ह मु ना दि
न स्या क र मि ह र व सु क द स्य यो ह स स य द
स्वान हो या वृथि या न ला हा वृथो ह प लु यो वि

य न न तु, थ स न तु, ज स न तु, आ का स
 व न न तु, पा न न तु, पु न न तु, द या न न तु
 नि न न तु, ख न न तु, धा न न तु, पै ना पा न न तु
 सार न न तु, ते न न तु, को न न तु, य न न तु
 मुनि न न तु, ख न न तु, थ न न तु, स न न तु

लो क उ र्ध्व सि यु मु ख न र्ध्व गे न को न र्ध्व य मु
 सु सि ल मो र्ध्व र्ध्व थि थि ज य न र्ध्व दा न र्ध्व
 य न र्ध्व सि ता र्ध्व र्ध्व नि र्ध्व थि थि गु यु लु हि द
 र्ध्व न थु उ र्ध्व न या द थु स ता य र्ध्व सि मा
 द या र्ध्व को र्ध्व थि थि गु उ र्ध्व न ॥ वृद्ध भ ग वा न

॥ धनसि साके मुनि भगवान् सुमेरु पर्वत
भादय का बुवि आ क म दे व म मा ग न प नि
शित का म प म यु रि दे स या स नि प स की क
म मि का या क स म मि ग दा व स भा द य
वु मि आ न स मा रा न म नि ग ड ही का म उ का व

ह मा य दु

नै क

इ व र

द

॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वधर्माणां मया धर्मो रक्षितः ॥
यथा धर्मो रक्षितः स तदा धर्मो रक्षितः ॥
सर्वधर्माणां मया धर्मो रक्षितः ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वधर्माणां मया धर्मो रक्षितः ॥
यथा धर्मो रक्षितः स तदा धर्मो रक्षितः ॥
सर्वधर्माणां मया धर्मो रक्षितः ॥

निरसयो दस कुवेर या पुत्रा नानादि
दस अतिदेवता या वायव्य दिशा सको द
यु देवता या ~~५~~ हनन हत्य दिशा सको द
हिला देवता या ~~५~~ दम ईशान दिशा सको द
ता अतिमहदया हन वय कुंभ सको द सना

नानाया ॥ यस्तु हो सको द सनाया धने द
सको दया धय २ पुत्रा परि वार सिधे मे
नानाया दया सना गुप्त वनं ॥ हनन
सना सना दया विहया स कुवेर धपे स
धय परि वार पुत्रो द सको सना नानाया

श्री ॥ दानयाथ ॥ स ॥ शुक्ल नृहर्नृकुसुम
वै ॥ शुद्धयेतामनु ॥ तयाथयुक्तैक
तन ॥ श्री ॥ गवा ॥ थासससभाशुक्ल
सा ॥ मित्रमतातयाससुखं धसभागन
कैकतु ॥ शुभजवानया ॥ उपदेसदेनईका

नावसक ॥ नि ॥ यन ॥ ॥ तदवसानेत्तादि ॥ थये
सभागनपनि ॥ धर्मउपदे ॥ नि ॥ यया ॥ शु
मुखना ॥ श्री ॥ के ॥ तुनिभ ॥ म ॥ मर्ममर्नवि
या ॥ दा ॥ वि ॥ त ॥ शुभभागनपनि ॥ त ॥ य ॥ य
विद्यभा ॥ म ॥ श्री ॥ गवान्समा ॥ वा ॥ य ॥ वि
त ॥ ध ॥ स ॥ य ॥ श्री ॥ कासस ॥ शु ॥ त ॥ न ॥ द ॥ स ॥

एतौ यु. हा. दु. स्वा. सु. स्वा. उ. आ. उ. क. पू. ह्या. वा.
दत. अ. सु. तु. या. ^न अ. नि. वा. न. अ. ना. व. वो. द. पु.
जया. वि. य. अ. न. द. त. थ. वे. ल. वा. रा. त. त. ये. वे.
दे. व. ता. अ. शा. न. त. न. स. ज. न. अ. मि. ता. न. ज. मो.
^न ये. जे. ध. न. द. वे. न. ग. र. ल. ध. न. न. नि. ग. रु. व. ल. य. या. प.
॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यावैरुद्धनमनसः सुसुधर्म उपदे सरना
सनिश्चय दुव गुप्ति धाव दुई आ य
धक श्री गंगान सुवेतन था वि र
पनि रत्ना ल स्वया व आ ग्ना द य क
दि ॥ शुभित न म न वा ने या आ ल

॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥
रमे श्वर पुन नाथ वय या ज प्रा नि या धर्म स्व
वै स सा ज र का या द व वि ज्ञा क ल म र ड न र
स पर मे स्वर क ज पो न या पु सा ध न वै ते स
व धु नो ध वै नो नाम कु दु ध वै तो सा वै न
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वै ते जा अ संख्या वै ते जा आ का स म उ त्व ते दु य
यो ह् द ज पो ज से न द यो द सा वि आ य मा ह् ध अ
स स तु व गु वै त या वि धि वि धा न वु त वि स्ता न न क
वि आ द न ध क् षा न ग वा न या के भु वे त न थ वि
प्रा र्थ ना या न ॥ अ थ ख तु त्या दि ॥ यु जित भु वे त न
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वि र या र्था ज्ञे य या वृ वि न ति या क र्त्त र व द ना वृ
क्य मु नि न ग वा न आ ज्ञा द न क स वि आ न दे स
था वि र द्ध त व ध न सा धु ज न म दा शा मि द न वि न
ना गु णि व र्म न स सा त उ ह र ड वृ वृ लो क पा न स
जो ज या व र्मा क आ व क म दा ध र्म स सा सि क
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वकर्मदां प्राप्ता गुणैर्न तया धर्मविधिवि
जिनकनेना विज्ञाधिरयादावुदेदे कुवनेन
विरदे स मा मानेयनिधकन गको न आशो द
आत ॥ आदौ कस्या त्यादि ॥ एवं सत्येन स भवे तेषां
द्वक ता सविद्वत्तया न आर्षा कस्या गुणैर्न
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

तमान गुणैर्न तया धर्मविधिवि
जिनकनेना विज्ञाधिरयादावुदेदे कुवनेन
विरदे स मा मानेयनिधकन गको न आशो द
आत ॥ आदौ कस्या त्यादि ॥ एवं सत्येन स भवे तेषां
द्वक ता सविद्वत्तया न आर्षा कस्या गुणैर्न
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
धृत्वा भुवि भुवनं भूमिं दानं या नानाया कृतं सारं
त्रे लोका स नाम का युधन ईत्यादि सा युगुन व
यत्तु युधिपति रागो गुया वृजर्म का त व
सन नृप स वै त्वा था य ध क वा का यु व वृष्य या
सि यु न्ना स ध क न ग दान भा शा द सा वि
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ रमो भवान्मादि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
आ प स पा व स भा व त्वा था य ध क ना स पा व
वि नं वा ये को या यु अ ति वा न सा क था य भा न
थ व या न पु न्य क स पे स स सि र त्तु यु पा क स
ति अं स त्तु यु पा प द के फु स दान स फ रे त्तु यु
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥
तस्वयावृथवतिवृत्तात्मा भासयावृत्तार्थपरमज
रयाजिवृत्तात्मा भासयावृत्तार्थपरमज
निवृत्तयातपुन्यफलं कौपीं कागुनिग्या लाय सुदु
धासा रूपवदना सग्या ससका राविग्या नपुम्वदः
धस्वरूपार्थार्थिगुग्या नसंपूर्णं गुपुदे हया कलावि
५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥

५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥
ध्विमानदईवृत्तं नैकवधुमित्रदयके फईवृत्तानपुन्य
यानायागुडत्यतिगुपुधक श्रुं नगमानसुवेतन
थविरपुषु खन्तु आगाद ल्यविआत ॥ विवित्रत्पादि
॥ रुतकन धर्मरत धायागुगा थापनया वृथा सांघि
कायपरमेश्वर भासयावृत्तं नैकवधुमित्रदयके फईवृत्तानपुन्य
॥ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
मे नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वतया वृभजनाया ईव धनया तनया वाननिनिव
वपनरथेय मासमथ डैज वनया ते रक्षाया यफईव
धक श्री न गवाने जा ग्या द स्या विद्या त ॥ सुपति धित
दि ॥ हुन क नरेव स न सुपति धित धाया गु गाथा पन
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
पाव पातपतं व लज्जति गवाने देव को यवि मासा दयका
वृक्षा जपा वे लभासन स त ईव धनया तफ ते पु न्य ज त
ने व धया के द या द यु व ध या व र न स स दान के ने
द ईव ध क श्री न गवाने सुवे त न था व र पु तु र द मा
ग्या द य क स्या विद्या त ॥ मंत्र धर्म त्पादि ॥ हुन क न ग्व
सम नु भन पुति स्या मंत्र धर्म त्पादि ॥ हुन क न ग्व
सम नु भन पुति स्या मंत्र धर्म त्पादि ॥ हुन क न ग्व